विकास

[पांच टा चिट्ठी]

चतुरानन

आठ आना

जयरत्न ग्रन्थमाला क ५ रत्न

विकास

(पाँच टा चिट्ठी)

चतुरानन

मूल्य ।।) आना

प्रकाशक—
श्री शंकरानन्द मिश्र (मोख्तार)
जन-प्रकाशन-भवन
मधुबनी (दरभंगा)



अगहन, सम्वत् २००५
प्रथम संस्करण—१०००
१९४८



मुद्रक—
नया बिहार प्रेस, लि०
कदमकुआँ, पटना

पाठक सँ

अपना समाज में ई धारणा बड़ प्रबल अछि जे ई विश्व, अर्थात् पृथ्वी, कोनो चतुर कारीगरक मन-तरंग क व्यवहार चलल थीक। एक बेरि यदि एकरा परम सत्य मानि ली त अपन व्यवहार चतुर मात्र जबर खेत थी और हम-अहाँ कोनो जबरदस्त खूँटा में बान्हल पशु छी, जकरा दौड़ें में की मोन लगते! तें पर सँ अति प्राचीन छान्दोग्य उपनिषद क पूर्ण जन्म क रंग अपन भविष्यो थीक नहि राखि सकै छी। ई धारणा मूलकाल में कतेक टा सर्वनाश क अछि चल तकर हिसाब थीक।

(सत्य थोपल थीक जे व्यवहार सिद्ध हो। प्रति क्षण परिवर्तनशील दुनियाँ में परम सत्य ज्ञान त असम्भव अछि किन्तु सापेक्ष भावे ओकरा जाननअसम्भव नहि।)

—वर्तमानो में ई कतेक प्रबल अछि और कतेक घातक!

एहि पाँच टा चिट्ठी में जे प्रथम एक साधारण साक्षर मैथिल कन्या केँ लिखल गेल अछि विकासवाद क सत्यता दिस ध्यान देवाक प्रयास कैल गेल अछि। कोनो दार्शनिक विचार क तर्क क खण्डन-मंडन क पूर्व ई राखब हम उचित बुझलहुँ। राखवाक एक मात्र उद्देश्य अछि जे पढ़निहार अपन आलोचनात्मक विचार विनिमय में हमरो मिलावथि। ई विचार कोनो हमर मौलिक नहिं अछि से कहि दे चाहु, एतबे कही छी ई जे हम आलोचना मनन कै एकरा मानै छी।

हमर एहि तरहक प्रयास एहि हेतु ए अछि जे कतेको प्रगतिशील लेखक, समाजपति क निरंकुश 'आंकुश' क डरे सत्य साहित्य लिखवा में पंगू भेल, आवाक आगि जकां तरेतर धधकि रहल छथि, ओ लोकनि एकरा पढ़ि, अपन सत्य विचार तथा सत्त साहित्य लोकक सामने रखवा में समर्थ होथु और एहि पुस्तक क त्रुटि पर ध्यान नहिं दे, एहि सँ बढ़िया पुस्तक समाजक सामने राखि, पाछ लागल समाज के प्रगतिशील बनएवा में सहायक होथु।

चतुरानन

'लेखक' एहि पुस्तक क नाम "पाँच टा चिट्ठी" मात्र राखि, तटस्थ छला, मुदा हमरा ओहि नाम सँ तृप्ति नहि भेल और हम एकर नाम 'विकास' राखि समाजक भीतर पंडित, पूंजीपति प्रभृति सँ बढ़ैत पच पच करैत दुर्गन्ध युक्त बरसाती मन्दरिया सन, धार्मिक, आर्थिक तथा सामाजिक अन्धकारक खेल एकरा वास्तविक 'विकास' बुझैत छी, और जहाँ विकास भेल कि चोरके चिन्हैत देरी नहि लागत और चिन्हैत देरी चोरक दशा की होइत छैक, से तऽ बुझले अछि

—"माथुर"

विश्व

एहि चिट्ठी में हम लिखै छी जे ई संसार ककरा कहै छै? ई बात त सब बुझै अछि जे एहि संसार क अन्त नहि छै, संसार अनन्त अछि, सीमारहित अछि, मुदा कोना अनन्त अछि ई सबकेओ नहिं जनै अछि।

एहि विश्व में प्रथम विशाल वस्तु जकरा सबकेओ जनै छी ओ थीक पृथिवी। पृथिवी चौड़ा नहिं गोल अछि, एकरा त प्रायः आब सब मानै अछि भने ई देखैत चौड़ा बुझाए। मुदा एखनहुँ तक बहुत गोटे एहि भ्रम में अछि जे पृथिवी काछु पर तऽ शेषनागक फण आदि पर अछि। संग-संग ई हो जे काछु करोट बदलऽ लगै अछि तखन भूकम्प भ जाइ अछि। यथार्थ में पृथिवी सूर्य, शुक्र, बुद्ध, मंगल, वृहस्पति, शनि, वरुण, एरोस, नेपचूँ और प्लूटो आदि जकाँ एक टा ग्रह मात्र टा छथि। चन्द्रमो एक टा ग्रह छथि मुदा बहुत छोट और सदिखन पृथिवीक चारूकात घुमैत रहै छथि।

वैज्ञानिक लोकनि तरह-तरह क हिसाब और खोज सँ पृथिवीक आकार-विस्तार, गर्भ, तौल, वायुमंडल, गति, कक्ष, आयु, प्रारम्भिक अवस्था और तकर बाद क अवस्था, जन्म आदि बहुत बातक विषय में बहुत किछु ज्ञान हासिल कएलैन्ह अछि जे सबकेओ मानै अछि कारण, ओ व्यवहार सिद्ध

अछि। पृथिवी करीब-करीब संतोला नेबो सकाँ अछि ई त अहाँ अपनहुँ पढ़ने हैब तँ यदि एहि गोल पदार्थ क सब सँ उभरल भाग कें चारुकात सँ सूत ल लपेटल जाइ त २४६०८ मील सूत क जरूरत हएतैक और यदि एक लोहा क छड़ पेट में भोंकल जाइ त ७६१३ मील लम्बा छड़ एहि पार सँ ओहि पार तक हैतैक।

पृथिवी क गर्भ सँ तरह-तरहक पदार्थ, जेना कोयला, लोहा, नोन, रसायनिक पदार्थ आदि बहराइ छै। पृथिवी क गर्भ क हालत जनै लेल एकटा यन्त्र होइ छै जकरा सीसमोग्राफ कहल जाइ छै। पृथिवी क भीतर बहुत दूर तक एखनहुँ मनुष्य नहिं जा सकल अछि। सबसँ गहींर खान खाली सवा मील (मारोबेल्हो, बाजील, ६४२६ फीट) छै। ई दूरी जखन एहि पार सँ ओहि पार क दूरी ७९१३ मील छै कतेक कम छी से अहाँ स्वयं अनुमान करू। पृथिवी क तर में फी दु सौ फीट पर एक डिग्री (फ) गरमी बढ़ि जाइ छै।

पृथिवी बहुत तरहक तह सँ बनल अछि। सबसँ नीचुलका तह, जे सब सँ घन छै (पानि सँ ५॥ गुन घन) लोहा और निकेल धातुक छै। तै सँ ऊपरका एक तरहक पाथर बसाल्ट चट्टान क छै और ताहू सँ ऊपरका चट्टान और पाथर क छै जकरो में कैएक तरहक भेद छै।

पृथिवी क तौल प्राय: १७० हजार संख मन छै।

पृथिवी क ऊपर में वायुमंडल छै जे करीब दू सौ मील मोट खोल जकाँ पृथिवी कें चारूकात सँ घेरने छै। बसातोक

(वतास) तौल होइछै और ओ तूर क ढेर जकाँ क्रमश: ऊपर में हल्लुक भ गेल छै। बसातक भार क तौल बेरोमीटर नामक यन्त्र सँ होइछै। १२ हजार फीट ऊपर में बहुत कम मेघ रहै छै। २० हजार फीट ऊपर में कोनो अन्धड़-बिहारि नहिं रहै छै। एहन जगह में हवाई जहाज कें उड़बा में आसान होइछै मुदा एतेक ऊँच स्थान में वसातक एकदम अभाव में उड़बे कठिन भ जाइछै।

हमरा लोकनिक पूर्वज पृथिवी कें 'अचला' जे चलए नहिं, कहै छलखीन्ह किन्तु यथार्थ में पृथिवी चलमान छथि और पृथवी केर दू टा गति छैन्ह। एकटा दैनिक-रोज पृथिवी करीब २४ घंटामें अपन कील पर घूमि जाइ छथि। अही घुमनाईमें जे हिस्सा सूर्यक सम्मुख रहै छैन्हि ततए दिन और जे परोक्ष में, ततय राति रहै छै।

पृथिवीक दोसर चालि, जाहि सँ पृथिवीक अपन कक्ष पर ३६५$\frac{१}{४}$ दिन में एक बेरि सूर्यक चारूकात घूमि जाइ छथि। एहि गति सँ दिन-राति पैघ वा छोट और ऋतु परिवर्तन होइ अछि। पृथिवी अपन कक्ष पर ६५ हजार मील प्रति घंटा और कील पर १०४०$\frac{१}{२}$ मील प्रति घंटा क चालि सँ चलै छथि।

पृथिवीक आयुक पता से हो लोक लगौलक अछि। समुद्र क पानि नोनगर होइछै कारण, नदी, पृथिवी सँ धोखारि २ नोन समुद्र में ल जाइ छै। सम्पूर्ण समुद्र में कतेक नोन छै और ओतेक नोन कें लएवा में कतेक वर्ष लागल हएतैक एहि सँ

लोक पृथिवीक आयुक पता लगौलक। मुदा एहि तरीका में भ्रमक बहुत गुंजाइश छै कारण समुद्र और नदी क आयु तथा नदी प्रतिवर्ष कतेक नोन अनै अछि ई ठीक सँ जानब कठिन छै। दोसर तरीका चट्टान सँ पता लगाएब अछि किन्तु ओहो भ्रममूलक अछि कारण प्रतिवर्ष कतेक माटि क कैकटा तह जमै छै से ठीक २ बूझब कठिन। तेसर तरीका रेडियो क्रिया वाला धातु, जेना रेडियम इरानियम क स्वत: टूटबा क हिसाब पर छै। इएह तरोका बहुत ठीक छै जाहि सँ पृथिवी क आयु दु अरब वर्ष होइछै।

पृथिवीक जन्मस्थान कतऽ छैन्ह और कोना जन्म भेलैन्ह ई एकटा बहुत महत्वपूर्ण प्रश्न थीक। दुनिया क श्रेष्ठ विद्वान लोकनिक विचार छैन्ह जे सूर्य क लग सँ एक समय में एकटा तारा चल जाइत रहए और ओकरे खिचैला सँ सूर्य क एक भाग सिगार क आकार सन छूटि क फराक भ गेलैन्ह। फेरि ओ सिगार कै हिस्सा में बटि गेलैक और ओहि में एक टा तेसर टुकड़ा पृथिवी छी। ई टूटल टुकड़ा सब एखनहुँ तक सूर्य क चारूकात परिक्रमा कए रहल अछि और देखबा में सिगार जकाँ दुनू छोर पर पातर, बीच में उभड़ल छै।

शुरू में पृथिवी गैस क ढ़ेर रहए और प्राय: पाँच हजार वर्षक बाद तरल पदार्थ भ गेली और तकर दस हजार वर्षक बाद ठोस भ गेलीह। पहिने पृथिवी पर कोनो जीव-जन्तु नहिं रहए। समूचा पृथिवी बालु भरल जतए-ततए दरारि फाटल, जाहि में सँ चट्टान सब पघलि-पघलि अलकतरा

जकाँ बहराइत रहए और ऊपर आकाश मेघ सँ भरल रहए। अदिखन वर्षा होइत रहैं। ओहि दिन चन्द्रमा सूर्य से हो प्राय: पृथिवी पर नहि उगैत रहथि। बाद में पृथिवी क्रमशः ठंढा होइत गेल और कालक्रमे जीव-जन्तु क बसै योग्य भ गेल।

दोसर वस्तु जकरा हमरा लोकनि नित्य देखैछी ओ थीकाह सूर्य। सूर्य पृथिवी सँ १३ लाख गुन पैघ छथि मुदा ओ हमरा लोकनि सँ ९ करोड़ ३० लाख मील दूर पर छथि तैं ओतेक छोट बुझाइ छथि। सूर्य में ततेक गर्मी छैन्ह (ऊपर तह में ६००० डिग्री और भीतर में ५ करोड़ डिग्री) जे सब वस्तु लोहा और प्लाटीनम सन कड़ा वस्तु गलिए टा नहिं जाइ अछि, गैस भ जाइ अछि। सूर्या में सँ प्रति सेकैण्ड १४ करोड़ मन गर्मी बहराइ छैन्ह जाहि सँ सूर्या एक दिन चन्द्रमा जकाँ ठंढा भ सकै छलाह किन्तु दोसर कारण सँ (हाइड्रोजन क भिन्न २ परमाणु में बदलबा क कारण) सूर्या करीब साढ़े पैंसठि लाख वर्ष में फेरि ओहि गर्मी कए हासिल कय लै छथि। सूर्यो पृथिवी जकाँ अपन केन्द्र पर ६७ हजार मील प्रति घंटाक चालि सँ दौड़ै छथि।

तेसर वस्तु जकरा सँ हमरा लोकनि पूर्ण परिचित छी ओ थीका चन्द्रमा। चन्द्रमा आकाशमें हमरा लोकनि सँ सबसँ लग छथि और तएँ सब सँ छोट होइता (पृथिवी सँ ५० गून छोट) ओतेक टा बुझाइ छथि। दूरबीन सँ चन्द्रमा परहक पहाड़, ज्वालामुखी आदि कें हमरा लोकनि आसानी सँ

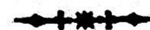
देखि सकै छी। चन्द्रमा ततेक ठंढा भ गेल छथि जे आब ने ओत मेघ छै ने नदी, ने समुद्र और ने छै हवा।

ज्योतिषी सब टिपनि में जाहि सब ग्रहक नाम कहै छथि ओ सब नित्य आकाश में उगैवाला तारा सब छथि। दू-तीन टा ग्रह जेना प्लूटो, नेपचू, एरोस आदि क पता ज्योतिषी लोकनि कें नहिं रहैन्ह। विद्वान लोकनिक अनुमान छैन्ह जे एहन पहन ग्रह आकाश में गोटेक दर्जन और छथि जकरा हमरा लोकनि यन्त्र सँ देखि सकै छिऐन्ह।

अधिक काल राति में अहाँ टूटैत तारा कें खसैत देखैत हैबै और से देखि पाँच ब्राह्मण, फल, कुमारिकन्या क नाम लैत हैब मुदा असल में ओ तारा टूटि कए नहिं खसैत रहै छै। जखन आकाश महक कोनो पिंडक अंश पृथिवी वा अन्य पिंड जे ओतेक टा और ओतेक झोंक सँ घुमै अछि खिचा जाइ छै त ओकरा हवा सँ टकराए पड़ै छै-जाहि सँ ओ जरैछ और ताहि सँ प्रकाश भ जाइ छै। अही जरै में ओ खाक भ जाइ अछि और पृथिवी तक नहिं पहुँच पबै अछि। गोटेक बेरि पृथिवी पर चलो अबै अछि।

आकाश में एक टा चीज जे सब राति देखै छिऐ ओ थीक तारा। उत्तर, हस्त, चित्रा आदि सत्ताइशो नक्षत्र तारा थिका। ई सब एक ने एक समय में आकाश में उगै छथि। तहिना बारहो राशि जेना अहाँक जन्म राशि कन्या अछि तारा थिका ले आकाश में उगै छथि और जाहि समय में अहाँक जन्म भेल ताहि समय में सब साल उगै छथि जकरा अहाँ देखि सकै छिऐ। ई सब तारा देखैत एतनो टा लगै छथि मुदा फेकटा पृथिवी सँ करोड़ २ गुन पैघ छथि। जखन रोशनी एक सेकेण्ड में १८६ हजार मील चलै अछि तखन सब सँ लग क तारा क रोशनी कें हमरा लोकनि लग अबै में ४ वर्ष लगै छैन्ह। जाहि ध्रुव तारा कें अहाँ कए व्याहक राति में देखाएल गेल से यथार्थ में अहाँक जन्म सँ १६।। वर्ष पहिलुके ध्रुव रहथि कारण, ध्रुव क रोशनी कएँ अहाँक लग पहुँचै में ३६।। वर्ष लागि जाइ छै। अन्हरिया राति में आकाश में किछु दूर उत्तरे-दक्षिणे खूब सघन तारा देखैत हएबै जाहि सँ ओ हिस्सा एकदम प्रकाशमय बुझि पड़ै छै और ओ धार जकाँ बुझि पड़ै छै ओकरा 'आकाश गङ्गा' कहल जाइ छै।

आब अन्दाज करियौ जे विश्व कतेक टा छै। कतेक फैलल छै! मुदा एते टा तारा, सूर्य कथी पर अड़कल छथि, एकर किछु अड़कन छैन्हि की नहिं? विना अड़कने कोने चीज केना रहतै? ई जतेक तारा, सूर्य, पृथिवी वा चन्द्रमा देखै छिऐ सब आकाश में खूब जोर स दौड़ि रहला अछि। एतेक टटा ग्रह, तारा सूर्य जखन ओतेक बेग सँ घुमै छैन्हि त हुनकर झोंक सँ सबहक गति टेढ़ अंडाकार भ जाइ छैन्हि जेना चलैत रेलगाड़ी सँ केओ सोझेसोझ नहिं कुदि सकै अछि। बेगक झोंक सँ ओ टेढ़ भ जाएत। अही झोंक पर सबहक सबके खिंचाबट पर सब निरन्तर घूमि रहल अछि, अड़कल अछि।



(२)

पछिला चिट्ठी में लिखने रही जे ई विश्व कोना अनन्त अछि और पृथिवी क जन्म कोना भेलै। पृथिवी जखन एतवा ठंढ़ा भ गेली जे ओहि पर जीव-जन्तु रहि सकय तखन ओ धधकैइत पिंड सँ ठोस भ गेल छल और भाप सब पानि बनि दिन-राति मुसलाधार वर्षा होइत छल। अही अतिशय वर्षा सँ पृथिवी पर झील और महासमुद्र सब भ गेल। अही पानि में ओहि सब पदार्थ क जे जीव क लेल जरूरी छै आवश्यक रीतिक मिश्रण सँ प्रथम जीव क सृष्टि भेल। ओना तँ सूक्ष्म दृष्टि सँ ई कहब कठिन अछि जे कोन जीव छो और कोन निर्जीव तथापि पहिल जीव जे दुनिया में भेल ओकरा लोक 'आमोयबा' कहै छै। ई पानि में एक बून्द तेल जकाँ रहै छल और पानिए में मिलल नोन और कार्वन द्विओषिद वा एहने और पदार्थ ओकर भोजन छलै। ई जीव एक कोशीय वा एके सेलवाला होइ छलै। पानि में बहुत दिन रहलाक बाद ई स्वतः दु हिस्सा में बँटा जाइ छलै। अही तरहक जीव में सँ दू टा शाखा बहरै लै। एकटा सँ गाछ विर्छ भेल दोसर सँ जानवर। ई भेद कोनो एक दिन या एके वर्ष में नहिं भेलैक। एकरा में हजारों वर्ष लगलै जाहि में क्रमिक विकास होइ छलै।

अहाँ सँ यदि केओ सवाल करए जे पहिने अंडा भेलै की

परवा तऽ अह कठिन में पड़ि जाएब। औं कहवै जे पहिने अंडा भेल तऽ बिना परवे अंडा हएतैक कोना और यदि पहिने परवा भेल तऽ बिना अंडे परवा कोना भेलै ! किन्तु जीवन विज्ञान कें जानैवाला वैज्ञानिक लोकनि एहि बात कें खोज कएलैन्ह अछि जे सर्व प्रथम जीव क जन्म भेलाक बाद कोना सहसा और क्रमिक विकास होइत गेल। एकरा पता लगवै में हुनका दुनिया क विद्यमाने चीज सँ मदद भेटलैन्ह अछि। ओ कोनो अपरिवर्तनशील परम ब्रह्मक स्वप्न सँ नहिं भेलैन्ह। पहिलुका चिट्ठी में लिखने रही जे पृथिवी कोना भिन्न-भिन्न तरहक चट्टान सँ बनल अछि और एहि सब चट्टानक कोना सृष्टि भेलैक। ओहि चट्टान क तह कें फोलला सँ ओहि में तरह-तरह क जीव-जन्तु क चिह्न भेटै छै। जाहि समय में पृथिवी क समुद्र में आदि जीव सब बनि रहल छलै ओही समय धोखारल माटि-बालु आदि सँ समुद्र भरल सेहो जाइ छलै और कहियो २ भूकम्प सँ इएह सब ऊपर उठि अबै छलै। अही तरीका क सामुद्रिक या बाहरी चट्टान में तरह तरह क जीव-जन्तु पीचा जाइ छल। वैह मरल पिचायल जीव सब पथरागेल छै जाहि कारण सँ ओ चिन्ह ओहिना बनल छै। अही पथरायल चिन्ह सँ बहुत बात क पता लगैछ। एहि चट्टान कें देखला सँ बुझाई छै जे सब सँ पुरना चट्टान (PRECAMBRIAN) में कोनो तरहक चिह्न नहिं छै। तकर बाद क चट्टान (CAMBRIAN) में सब सँ प्राचीन गाछ और जीवक चिह्न छै। भिन्न-भिन्न विशेषतावाला जीव जन्तु भेटै

छै जेना सिलुरियन काल में पीठ क रीढ वाला हड्डी वा भीम-काय शरीर अखन एकटा गिरगिट सन जानवर ६०-७० हाथ क होइ छलै। बाद में फेरि एहन जीव भेलै जे बच्चा कएँ दुध पियाबै अछि।

आइ सँ दस लाख वर्ष पहिलुका स्तर में वन-मानुष सन जीवक चिह्न भेटैत अछि। इएह वन-मानुषक विकास होइत २ आइकालिहक मनुष्य भेल। जीवक स्वभाब छिऐ जे अपन चारुकात जेहन स्थिति रहतै ओही में रहैक ओ अभ्यास करत। अहाँ बेंग देखै छिऐ ओ पानियो में रहै अछि और जमीनो पर। एकर मतलब जे जखन पृथिवी सुखाए लागल तखन जीव कोशिश कएलक जे पानि-माटि दुनू ठाम रही। ओही तरहें चिड़ै जे आकाश पानि-माटि तीनू ठाम रहै अछि।

यूरोप में डार्विन नामक एक वैज्ञानिक आइ सँ करीब दु सौ वर्ष पहिने भेला जे अपन किताब "मनुष्यक अवतार" में विश्वस्त प्रमाण सँ सिद्ध कएलैन्ह अछि। विकासक घोड़दौड़ में कोना बानर, बनमानुष और मनुष्य आएल। मनुष्य और बनमानुष या बानर क शरीरक बनाबट में बड़ कम अन्तर छै। साधारण रुपक समानता तऽ अहाँ अपनहुँ देखि सकै छी। एहनो बानर होइछ जकरा नडरि नहिं होइ छै। मनुष्यक शरीर में यदि बानरक शोणित क सूई देल जाइ छै तऽ कोनो खराबी नहिं करै छै। किन्तु सब सँ मुख्य बातक फर्क जे मनुष्य और बानर या बनमानुष में छै ओ सोचबाक शक्ति। मुदा ई फर्क व क्रमिक विकासक प्रमाण छी।

मुदा एहि सब बातक ई अर्थ नहिं जे कोनो बानर कैं वा बनमानुष कैं कोनो दिन आई-कालिहक मनुष्य सन बेटा भ गेलै। कथमपि नहिं। एहि तरहक विकास में लाखो वर्ष लगलै। आइ जाहि रूप में मनुष्य कें देखै छिऐ लाख वर्ष बाद भ सकै अछि जे ओहि रूप में एकदम परिवर्तन भ जाइ।

आब अहाँ अन्दाज क सकै छी जे हमरा सबहक धर्मशास्त्र में जे कहल आइ अछि जे ८४ लाख योनि अछि, झूठ छी। कारण, एहि ठाम नित्य नव नव तरहक योनि या जीव जन्तुक सृष्टि होइ अछि। अहूँ यदि झाड़ी-झाड़ी नली महक कीड़ा सब दिस ध्यान सँ देखबै तऽ बुझै में आएत जे किछु नव तरहक कीड़ी क जन्म होइ छै और किछुक रूप में क्रमिक परिवर्तन स्थान या समय क्रम सँ भ रहलै अछि। ओही तरहें कोनो खास तरहक कीड़ा एकदम नापता भेल जाइ छै। एक दिन हम अहाँ कें कहने रही जे हाथी क वंशक कोना नाश भ रहलै अछि और बहुत सम्भव छी ५ सौ वर्षक बाद हाथी क सर्वनाश भ जाइ। कतेक एहन जीव अछि जे एक दिन हाथियो क हाथी छल मुदा आइ ओकर अस्तित्व साबित करै लेल बहुतो विद्वान कएँ माथापच्ची करए पड़ि रहलैन्ह अछि।

अहाँ कएँ एखनहुँ विश्वास नहिं हैत जे अपने स अपने कोनो जीवक जन्म कोना हएतैक। उदाहरण लए हम अहाँक माथक ढीलक कथा कहै छी। अहाँक माथ में ढील कतऽ सँ आएल ? कोनो जरूरी नहिं छै जे कोनो एहन लोक सँ पटौने होइ जकरा माथ में ढील छलै। माथ में मइल रहला सँ पानि

के हवा-रौद क अभाव में लगला स ँ ढील स्वयं फड़ै छै। आँगन क छूतहर में यदि पानि बहुत दिन तक पड़ल रहि जाए त ओहि में अपनहु कीड़ी फड़ि जएतैक विन अंडा-बच्चा या बुढ़िया देने। ओहो तरहें पृथिवी पर स्वयं जीव क जन्म भेलैक। हाँ, एक बेरि जखन ओहि तरहक जीव उत्पन्न भऽ जाइ छैक तखन फेरि स्त्री-पुरुषक संयोगे स ँ जन्म हएबाक सिलसिला बनि जाइ छै और ओहू में तरह तरहक परिवर्तन तथा विकास होइत रहै छै। हम एक दिन अहाँ के केहने रही जे कोना एक (सेल) कोशीय जीव क सन्तान विन बापक से होइ छै।

आब अहाँ बुझि सकै छिऐ जे एहि सृष्टिक रचना में कोनो भगवानक हाथ नहिं छैन्हि स्वतः स्वाभाविक नियम पर ई सृष्टि बनै छै और विनाश होईत रहै छै।



(३)

गिरीडीह
१६-८-४८

एहि चिट्ठी में लिखै छी जे जखन मनुष्य क अवतार भेलैक तखन मनुष्य समाज क विकास कोन रूपे भेल। पहिने क दुनियाँ जंगल सँ भरल रहए। एखन जे घर-आँगन, खेत-खरिहान अहाँ देखै छिऐ से सब जंगलमय रहै। मनुष्य ओहि जंगल में नंगटे रहैत रहए। कन्द-मूल खाए-पानि पीवए शिकार कए जानवर क काँच माँस सेहो खाए। शिकार खेलाइ लेल पाथर क तेज हथियार बनाबए। जेना जंगल में वानर रहै अछि निर्विकार तहिना मनुष्यो रहैत रहए। बाद में बन-आगि में झरकाए माँसु सेहो खाय लागल। नोन क पता बहुत बाद में लगलै। सोभे जंगल में सुतने बाघ-सिंह क डर रहै तैं मनुष्य झुन्ड बान्हि-बान्हि आगि लग या पानि में मचान बान्हि कए ओहि पर सँ खोपड़ा बान्हि क रहए। नदीक कात में मनुष्य अधिक रहए कारण ओतय कन्द-मूल फल-फूल तऽ भेटबे करै संग संग माछ माँसु सेहो अधिक भेटै।

मनुष्य खेती-पथारी किछु नहिं जनैत रहए। बाद में जखन मनुष्य देखलक जे जखन कोनो फल खा क ओ फेकि दै छै त ओकर गाछ भऽ जाइ छै और फेरि ओहि गाछ में

ओहने फल फरै छै तखन मनुष्य कएँ खेतीक ज्ञान भेलैक। तखन ततेक परता खेत ने दुनिया में रहै जे मालगुजारी या खेत बिकेबाक कोनो बाते नहिं रहै। जंगल काटि क लोक खेत बना लिए। जखन खेती कर लागल तखन "जतहि घर ततहि घर" बन्द भ गेलैक लोक एक ठाम घर बान्हि क रहए लागल। खेती करै लए वा माँसु खाइ लए जानवर पोसाए लागल। मनुष्य जत रहै एक झुंड में वैह झुंड जखन बसि गेल तखन टोल या गाँव भ गेल। सम्पूर्ण झुंड कोनो खास मुनिक नाम पर प्रसिद्ध भ गेल जे सम्भवतः ओहि झुंड क "गोत्र" और जाहि जगह में ओ झुंड रहए 'मूल' क नाम सँ प्रसिद्ध भ गेलैक। एहि झुंड सब में एक कएँ दोसर सँ आपस में मारि होइ। दुनू झुंड आपस में खूब लड़ए और जे हारि जाए वा लड़ाई में पकड़ल जाए तकरा स दोसर झुंड गुलामी करवावै। झुंड में लड़ाई चलेवा लेल, आश्रम सम्हारवाक लेल एक टा क सरदार चुनब जे खूब होशियार हो, पहलवान हो जरूरी भ गेलै और ओहि झुंडक नाम सरदार क (मुनि) नाम पर रह लगलै। अही झुंड क (Geus) नाम कें गोत्र कहै छै जेना शाँडिल्य, भारद्वाज, काश्यप आदि गोत्र।

एहि झुंड में पहिने केओ छोट पैघ नहिं रहए, सब बराबरि। सब केओ मिलि क खेती करए और जे उपजै से खाए तहिना जंगल सँ शिकार मारि कए आनए और सबकेओ इच्छापूर्ण खाए। ने खेत बाँटल रहै और ने उपजे बाँटल

जाइ। कोनो आचार-विचार नहिं रहै। व्याह नाम क चोजे नहिं रहै। के ककर बेटो-बहु-भौजी या बहीन छिऐ से बूझब कठिन मुदा थोड़वे दिन बाद समाज में एकर विभेद हेब शुरू भ गेलैक।

झुंड क जे सरदार या मुनि रहथि तनिकर लोक बड़ मान-प्रतिष्ठा करैन्ह। लोक हुनक बल-पराक्रम सँ प्रभावित रहए। मुनि समदर्शी होथि—भोजन-समाज क बाँट या और कोनो तरहक चोज में गड़बड़ी नहिं होमऽ देथीन्ह। अपन मधुर स्वभाव सँ ओ सर्वप्रिय और सर्वमान्य रहथि। स्वभावतः लोक हुनका मुइलाक बाद हुनकर पूज्य चिह्न राख लागल। ओकर प्रणाम-पूजा आदि करऽ लागल। बहुत दिन वितलाक बाद इएह लोकनि कुलदेवता या झंकारबाबा ब्रह्म भ गेलाह और लोक हिनकर कोनो विशाल पीपर या वड़क गाछ तर पोंड़ी बनाक पूजा कर लागल। मनुष्य कएँ एहि समय में ई ज्ञान नहि रहै जे वर्षा किऐ होइ छै। पाथर किऐ खसै छै। बिजली किए चमकै छै मेघ किए गरजै छै वा आगि कोना बनै छै? दोसर आगि-पानि-पाथर आदिक आकस्मिक और अनियमित हमला सँ मनुष्य समाज क दिमाग में डर पैसि गेलैक और ओ एकटा देवता बुझि डराए लागल। अग्नि, वरुण, इन्द्र आदि सब देवता भ गेलाह।

जखन वर्षा नहिं होइ तखन वरुण या इन्द्र देवता कें खुशी कर लए हुनकर पूजा, नाचगान, कबुला-पाति करए और जौं बड़जोर बाढ़ि आबि जाइ तऽ कमला कें साँझ देन्ह,

तम्बाकू धदबैन्ह। बाद में जौं जौं मनुष्य कएँ एहि सब वस्तु क वास्तविक और व्यवहारिक ज्ञान होइत गेलैक एहि देवता लोकनि सँ छुटकारा पावए लागल। केओ कहऽ लगलै जे एक टा भगवान छथि त केओ ओहो नहिं। जौं केओ कहै जे एकोटा भगवान नहिं छथि त दोसर कहि उठै जे विना कर्त्ता कएँ ई दुनियाँ बनलै कोना ? तेसर कहै जे यदि सब चीज क तेल बनैनहारक जरूरीये छैक त भगवानो क बनैनहार केओ अवश्य हएतैन्ह—बापो क बाप तकरो बाप……। केओ आबि सवाल करै जे पहिने गाछ भेल की बीया ? बिन गाछे बीया हैत कोना और बीयो गाछ कोना हएतै ? मुदा ई सब तर्क और दर्शन क लड़ाई त बाद में चलल। पहिने यथार्थ में मनुष्य कएँ भय और अज्ञान क कारण देवता, ब्रह्म और भगवान क भावना भेलैक जे एखन तक नेगड़अबैत चल अबै छै !

तऽ फेरि समाज में माए-बहीन, भाउज-भावहु आदिक विभेद कोना भेलैक और आचार-विचार क सृष्टि कोना भेलैक। पजियार अधिकारमाला कोना बनबऽ लगलाह। पहिने समाज में व्याह नामक प्रथा नहिं रहै। बाद में जखन वृद्ध और जवान में युवती लए मारि होमऽ लगलै तखन मुनि लोकनि फैसला कएलैन्ह जे बेटी क बाप संग अनधिकार छी। तकर बाद सहोदर भाए-बहिन में और फेरि छोट भाए क स्त्री क संग पैघ क सम्बन्ध आदि अनधिकार घोषित कएल गेल। भावहु क संग जे छुति तक मना छै तकर खास कारण इएह छै जे छोट-पैघ भाए में अवस्था क कम अन्तर हएबाक

कारण बड़ मारामारी होइत रहै और मनुष्य समाज बहुत खून बहेलाक बाद एहि निश्चय पर पहुँचल। पहिने त एक टा स्त्री कएकटा पति राखए जेना द्रौपदी जनिकर भोरे उठिकए अहाँ नाम लै छिऐन्ह। कुन्ती, तारा, मन्दोदरी, अहिल्या आदि सब भाजुक आचार-विचार क नाप सँ कुकर्मीए रहथि। आचार-विचार समय बदलला सँ या समाज-व्यवस्था या सबहक जड़ि उत्पादन क साधन क बदलला सँ बदलि जाइ छै। एक दिन रहै जे पाँच स्वामी रखितौं लोक ओकर पूजा करै, बाद में परमुख देखबा सँ आँखि फोड़ब नीक मानल गेलैक। ओहि समय में समाज में माउगि क प्रधानता रहबे करै। यदि केओ द्रौपदी या कुन्ती कें कुकर्मी कहितैन्ह त ओकरा फाँसिए पर लटका दीतथिन्ह। झंकारनाथ पंडितजी तऽ एखनहुँ सरकार कें तकरे सलाह देथीन्ह। खेती जावत तक दुनियाँ में नहिं आएल रहए तावत तक समाज में पुरुष सँ स्त्रीगणे क बेसी प्रधानता रहै कारण, माउगि लड़ाई, शिकार वगैरह काज में पुरुष सँ तऽ एको रत्ती कम नहिंए रहए, संग-संग ओ बरनीयो रहए। मुदा जहिया सँ खेती आएल और माउगि खाली चुल्हे फुकै में लागि गेल (खेती क बाद घर क काज बहुत बढ़ि गेलैक) तहिया सँ स्त्री वर्ग क धाक समाज में खतम भ गेलै और पुरुष क राज भ गेलैन्ह। खेती क असल काज तऽ पुरुषे करए तखन माउगिक कोन खुशामद ! आब त जेना शहर में सवारी भाड़ा पर भेटै छै तहिना माउगियो। एतेक जे माउगि समाज में खसि पड़ल तकर एकमात्र कारण जे ओ स्वावलम्बन छोड़ि

देलक। जखन पुरुष क समाज पर अधिकार एकछत्र राज भ गेलैक तखन ओ जै टा मोन फुरै बिआह करअ लागल। अपारा कृष्ण सौंद १६००० माउगि राख लागल मुदा सोलहो हजार सँ एक रंग प्रेम त केओ निवाहिए नहिं सकै छल तैं एक गोटा सँ बहुत प्रेम होम लगलै जेना राधा-कृष्ण क। बाद अही सँ एकांगी प्रेम, एक पत्नी जीवन चल लगलै मुदा ई प्रथा त असल में पूंजीवाद क जमाना में आइकालिह भेलै अछि। सामन्तशाही जमाना या रामराज्य में लोक बीस बीस टा ब्याह करै छल। अही तरहें जे किछु आधार-विचार क "उत्तम विचार" अहाँ देखै छिऐ तकर सृष्टि संघर्ष होइत-होइत अनुभव क आधार पर भेलैक अछि।

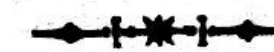
अहाँ पुछब जे अच्छा, त फेरि जमीन क बँटवारा, राजा-प्रजा धनीक-गरीब कोना भेलैक?

हम पहिने कहलहुँ अछि जे मनुष्यक जगह-जगह झुंड रहैत रहै तकर एकटा क सरदार लोकक चुनल रहै। ओ सरदार जखन मरि जाथि तखन हुनकर आदरक ख्याल सँ वा हुनकर कहल जे "हमर बाद हमर बेटा कें सरदार चुनि-यहुन" मानि क लोक सरदार क बेटा कें सरदार चुन लागल। क्रमशः इएह रिवाज चलि गेलैक जे सरदार क बेटा सरदार हुए और फेरि कालक्रमे वैह आराम तलब और निरंकुश राजा या जागीरदार बनि गेलैक। दोसर बात ई भेलैक जे झुंड झुंड में जे लड़ाई होइ और ओहि में जे आदमी पकड़ल जाइ तकरा सँ जीतल झुंड गुलामी करबावै, ओकरा खाइ लए

त दै रूख-सूख जैह सैह मगर बरद जकाँ कमबावहि। एहि गुलाम कें जौं मालिक जान सँ मारि दै छलै तैयो एकरा लेल कोनो हर्ज नहिं। मालिक गुलाम खरीदतौं-बेचै छल। गाए-महींस जकाँ ककरो दैओ सकै छलै। समाज में धनीक-गरीब, शोषक-शोषित क सर्व प्रथम वर्ग-विभेद एतहि सँ शुरु भेल। गुलाम कमेनिहार और मालिक खेनिहार। मालिक अपन आरामतलब जीवन बिताबए, भूखल गुलाम बरद जकाँ बहए। बाद में जगह-जगह गुलाम और मालिक में एहि पशु-जीवन क अन्त क हेतु भयंकर लड़ाइ होम लगलै। सब गुलाम मिलि क मालिक पर हमला क दैन्ह और मौका पावि जानो मारि दैन्ह। दोसर मालिक कें सेहो गुलाम कें खुएवा पिएवा, ओकर बाल-बच्चा सबकएँ गुजर जैह-सैह करवा में बड़ खर्च पड़ि जाइ तखन मालिक सब दोसर उपाय बहार कैलक खेत बहिया कें जोतै लै द देलकै और कहलकै जे तों खेत जोति क खो और ओकर बदला में हमरा मालगुजारी दे। हमर काज धंधा कऽ दे, ओहि तरहें बटैया चलऽ लगलै। मालिक केर जे जमीन अपन रहै तकरो बेगारी, हरि-हर आदि सँ जोतवा लिये। कहबाक मतलब ई जे बहिया-मालिक समाज क बाद सामन्तवाद या रैयति राजा क जमाना आएल। यद्यपि रैयति कें राजा या जागीरदार एखनहुँ सतेबे करै तैयो बहिया क तुलना में रैयति स्वतन्त्र जीवन बितव लागल याने शोषण क तरीका बदलि गेलैक। जागीरदार के जे एहि तरहे लोकक खून चुसि चुसि रूपैया अबै तै सँ ओ रंडी नचावै

भोगी रासए (वेह किसानक रूपैया मुफ्त में मालगुजारी तरे ल क ओही किसान क सुन्दर बहु-बेटीक इज्जति लै येह रूपैया द क) बेटी-बेटा क उपनयन, बिआह आदि में ढेर रूपैया खर्च करए, उड़ाबए जाहि सँ समाज क कोनो उन्नति नहि हो। आस्ते आस्ते समाज क ई हाल भ गेलै जे परिवार बढ़ला सँ जमीन छोट छोट कोला में बँटि गेलैक। जमीन में एते उपजा नहि होइ जे किसान अपन परिवार क गुजर क सकए उल्टे ओकरा अपन कमाई में सँ मालगुजारी-सलामी नजराना-जुर्माना आदि जमींदार कें पहुँचाबए पड़ै। जे केओ ई सब नहिं दै तकर जमीन छिना जाइ। जे खेत पहिने जंगल रहै और ओकरा काटि क जे खेत बनौलक तकरे धिया-पूता के मालगुजारी चुकब पड़ै और नहि चुकोला सँ छिनाए लगलै। अपने बाप-दादा क चुनल सरदार क धियापूता आइ ओकरा पर जुलम कर लगलै। फेरि इएह सब सरदार मिलि कए एक राजा चुनि लिऐ या कोनो सरदार अपन पराक्रम सँ दस-बीस सरदार कें जीति क चक्रवर्ती राजा कहाबै। ओही राजा क दरबार में पंडित रहथि जे शास्त्र बनावथि जे ई तऽ पूर्व जन्म क कमाइ छिऐ जे राजा राजा और गरीब गरीब होइछ। लोक कें राजा कें बाप तुल्य मानवाक चाही (पंडित जी खाथि तऽ राजा क अन्न, तखन यदि तरफदारी नहिं करितथीन्ह त राजा निकालिए दीतैन्ह)। और पंडितजी कहथीन्ह, खूब दान करअ। सोना दान करअ (तोरा बहू कें गहना बनबै लए) त अगिला जन्म ओहिना सोना भेटतऽ

(एहि जन्म हमरे सबटा सोना लेब दीअ, अगिला जन्म अहाँ, लेब पंडिजी, ब्राह्मण कें दान देला सँ बड़ धर्म होइछै (सब पंडित त ब्राह्मणे रहथि) खूब ब्राह्मण-भोजन करब (तोरा हलुआ-पूरी खुअबै लए, पेटमधवा !)" एहि तरहें तरह-तरहक भ्रमजाल ई लोकनि शास्त्र में रचलैन्ह लोक क संस्कार और ज्ञान कें बान्हि रखबा लै। एक तरफ राजाक फौज दोसर तरफ पंडितक भ्रमजाल में पड़ि कमेनहार लोक जीह जकाँ दोतरफा दाँत क बीच पड़ि "त्राहि, त्राहि" करै छल मुदा जेना दाँत झड़ि जाइ छै और जीह रहिए जाइछै तहिना एक दिन ई दाँत सब झरि जेताह।



(४)

गिरिडीह,
१८-८-४८

परसूका चिट्ठी में लिखने रही जे दुनिया में कोना कोना खेती बाड़ी शुरु भेलै, कोना समाज में धनीक-गरीब क सृष्टि भेलैक-पहिने कोना सब बराबरि रहैत रहए तखन फेरि कोना "बहिया" और "मालिक" इ दू वर्ग क जन्म भेलै और फेरि कोना "रैयति" और "राजा" क जमाना (सामन्तवादी काल) अएलै। यदि ओहि चिट्ठी कें फेरि एक बेरि मोन द कऽ पढ़बै त देखबै जे पहिने जखन आदमी शिकार वा फल मूल पर गुजर करै छल तखनुका समाज क बनावट एकदम भिन्न, दोसर तरहक छलै, आचार-विचारक नियमो भिन्न छलै, सामाजिक मान्-प्रतिष्ठा वगैरह एकदम भिन्न छलै। फेरि बहिया-मालिक क जमाना अएलै समाजक ढाँचा, रहन-सहन एकदम बदलि गेलैक। फेरि जखन रैयति-राजा क जमाना अएलै समाज क ऊपरी बनावट एकदम बदलि गेलैक। मतलब ई जे जखन-जखन जीवन-निर्वाहक तरीका में फेर-बदल भ गेलैक समाजक ऊपरका ढाँचा, रहन-सहन, आचार-विचार, धर्म, मान-प्रतिष्ठा आदि सब में समयानुकूल फेर बदल भ गेलैक। एक दिन जहिया फल-मूल पर जीवन निर्वाह होइत रहै—स्त्री-

पुरुष सब बराबरि रहए—विआह नामक चीजो नहि रहै—पुरुष सँ बेसी अधिकार स्त्रीगण क समाज में रहैन्ह। दोसर जमाना खेतीक अएलै—माउगि घर ओगरय लागलि—समाज में पुरुषक धाक बढ़ि गेलैक—आब पुरुष क जतेक मोन हुऐ व्याह करए। मुदा जौं जौं समाज आगू बढ़ैत गेल व्याह संबंध तौं तौं दूर क लोक सँ जेना एक गोत्र में नहिं, तऽ दोसरो गोत्र क संबंधी वर्ग में नहिं हो निश्चित होइत गेल। ओही तरहें धर्म, भगवान, देवता आदि क विषय में लोकक धारणा बदलैत गेलै—पहिने भूत-प्रेत तकक पूजा, तखन कुल-देवता, ब्रह्म तहीं संगे कोटि-कोटि देवता-इन्द्र, वरुण, अग्नि आदि तखन फेरि एक भगवान, फेरि निराकार फेरि सर्वव्यापी प्रकृति-भगवान वगैरह।

ओही तरहें समाज-व्यवस्था पहिने सर्वतन्त्र स्वतन्त्र, बाद में झुंडक सरदार या मुखिया लोकनि, फेरि इएह सरदार जागीरदार और राजा, चक्रवर्ती राजा आदि। एहि राजा लोकनिक समय में अबैत अबैत हमरा लोकनिक समाज (एशिया क मुख्यत:) एक पूर्ण व्यवस्था में बान्हल (Idyllic Community) में बान्हल गेल। गाँव गाँव सब तरहें स्वावलम्बित—एके गाँव में सब पेशाक लोक नौआ, बढ़ही, कोइरी, डोम, बरै, हजाम, मलाह, जोलहा, क्षत्रिय, पटवारी और ब्राह्मण आदि सबहक इन्तजाम छलै। एखन तक लोकक जीवन पारिवारिक जीवन छलै। साग की कण जे घर में हुए खाइ अनतः कतहु नहिं जाइ। रामायण महाभारत बँचैत रही। राजा कएँ

गाम गाम सँ कर वसुलि क जान्हि बैठ-बेगार-शौगाति-सलामी भेटैन्ह—दिवानजी कें सेहो दावातपूजा भेटले छकैन्ह। जहाँ-तहाँ विद्रोह होइत रहै। डाकू क बड़ डर रहै। डाक-प्रथा कमजोर रहै। ब्राह्मण क बड़ सम्मान होइत रहैन्ह। ओ पढ़ल लिखल रहथु की नहि, वेद-पुराण जनैत रहथु की नहि मुदा जेना आमक आँठी सँ आमेक गाछ तहिना ब्राह्मण क बच्चा ब्राह्मणे और "पुज्य" से हो।

एहि जमाना क "राम-राज्य" क अपना सबहक ओत लोक बड़ प्रसंशा करै छै कारण, एक अपना लोकनि ब्राह्मण छी और ब्राह्मण कएँ मुफ्तक बड़ सुख आदर भेटैत रहैन्ह। दोसर एहि जमानाक जे किताब लिखल छैक ओ केओ राजा क दरबारी या खुशामदिएक अधिकतर लिखल छैक। त एहि समय में बहुत लोक निरक्षर भट्टाचार्य रहए। जे किछु पढ़ल लिखल लोक रहए से ऊँचे जाति क और पढ़बोक अधिकार रहैन्ह ब्राह्मणे कें। राजा क दण्ड क तेहन ने आतंक रहै जे केओ ओकर खिलाफ नहिं बाजि सकैत छल। राजाक एहि जुल्म कें "कड़ा न्याय" कहि कहि प्रसंशा क पुल बान्हल गेल छैन्ह। राजा एकर कोनो इन्मजाम करबे नहिं करथाह जे केओ भूखल नहिं रहए मुदा भूख सँ आतुर भ अखन झोंझा-वाला चोरि करए तऽ ओकरा पकड़ेला उस हाथ काटि लेल जाइ और नीकलोक "न्यायी" कहि कहि ओही राजा क प्रसंशा करैन्ह। असल में एहि जमाना में गरीब जाति बड़ सताएल जाइत रहए। साधारण लोक बड़ तकलीफ में रहए। लोक

इनार महँक बेंग रहए। अज्ञान क कारण विज्ञान क अभाव में लोक कें बहुत परिश्रम करय पड़ै। छोट २ बीमारी क चलते वैद्यजी क करहा पीबैत २ मरिजाए। जे पिलही में आइ एक सूई सँ एकदम आराम से पहिने कतबो करैला क सोर खाउ तैयो गेले घर रहो। वैद्यशास्त्रो कएँ दन्तकथाक स्तम्भ में खुटेसि देल गेल रहै जाहि सँ ओकर व्यवहार क्षेत्र नव नव वस्तु क अनुसन्धान दिस नहिं जा पुरश्चरण-पाठ भ गेलैक। नुआ लए चर्खा काटऽ पड़ै। वैद्यनाथओ जएवा काल में कन्नारोहट मचि जाए जे आब कोन ठेकान घुरता की नहि से वैद्यनाथजी आब सबहक पहिल धियापुताक मंडप भऽ गेल। राजा क मुंहे कानून रहै। राजाक जूल्म सँ ब्राह्मणक डर सँ लोक त्रासित रहए। मुदा लक्ष्मेश्वर सिंह या कुलकमल झा लोकनि एहि गरीब किसान मजदूर क कमाइ पर खूब सुख लूटथि। तरह-तरह क एशोआराम, तेल-फूलेल, इत्र, फूल, ढाका वाला धोती, मखमल, अद्धी, कशीदा काढ़ल रंग-बिरंग क शाल सोना-चांनीक पलंग, संगमर्मरक मकान, आगू-पाछू नौकर केओ हाथ में माटि लगबै लए, केओ सुपारीक कतरा लए, केओ कपड़ा पहिराबै लए, केओ पंखा हुँकै लए, सजल सिपाही बल्लमबर्छा, राज-पुरोहित पंडित, हँसोढ़ संघ क पंच, किछु "नीक विद्वान" आदि सँ हिनका लोकनिक दरबार साजबाजक संग जवान छौड़ी क, आँचर लऽक नोर पोछैत "सखि हे हमर दुखक नहिं ओर" सँ गुंजैत रहए। दोसर दिश बैसाखक दुपहरिया में खेत तमैत रौदिया बिन नोने मड़ुआक सुखाएल

रोटी खाए-पाम और नोर मिलि क कखनो मुंह में चल आइ त नोनगर लगलै और मोन में भेलै जे पहिने खूब साफक मुंह-हाथ धो लै छी तखन खाएब। ई सोचि डाबा उठाबए त देखै जे अधे डाबा पानि; पाछु दिश सुनि पड़लै "रधिया चुप-चाप गेल छलै पानि भरऽ इनार पर त छोटका बौआ डाबा फोड़ि देलखीन्ह जे एहि इनार पर तों किये पानि भरै छे और मारबो कएलखीन्ह तऽ मंगला क डाबा में पानि अनलियै।"

मनुष्य अनुभवक अधार पर अपन माँगक पूर्तिक हेतु नव-नव चीजक अनुसंधान करैत रहैये। पहिने पाथरक बर्छा सँ शिकार मारए बाद में लोहा क बनौलक। ओही तरहें भाफक शक्ति क पता लगौलक। रेल चलअ लागल, कपड़ा क मिल खुजलै। बिजली क पता लगलै ओहि सँ आरो कारबार बढ़ि गेलैक। शरीर कोना चलै अछि, कोन चीज खेला सँ की होइ छै, कोनो बीमारी किये होइछै आदि, तरह-तरह क धातु क पता, खान क पता, रसायनक पता, प्रकृति क नियम क पता, विश्वक पता आदि लाग लगलै। जे दस गज कपड़ा लए विधवा लोकनि कएँ डिबिया क इजोत में चर्खा घनर-घनर करैत-करैत आँखि चोन्हरा जाइह, कान बहीर भ जाइह, जोलहा-जोलहिनिया कूची लऽक बाप-बाप क रगड़ए तैयो ताक बिगड़ि जाइ सैह हजार दस गज कपड़ा मिल सँ बिन हाही-बरबादी कएँ धड़-धड़ निकलऽ लागल। एहि राक्षस स्वरूप मिलक भोजन लए खेती में क्रान्तिकारी परिवर्तन ट्रैक्टर-वैज्ञानिक खाद आदि आबि गेल। ओही तरहें हरेक विषय में

परिवर्तन भेलैक। समाज में नव दू वर्ग भेलैक—पूंजीपति और सर्वहारा मजदूर वर्ग। जे रधिया कएँ अहाँक छोटका बौआ इनार सँ पानि भरै मारने छलखीन्ह से बम्बई सूती मिल में चल गेल और आब परम स्वतन्त्र अछि। ओकरा आब अपने क्वाटर में पाइप सें पानि खसै छै। अहाँ ओकरा भरि दिन अपना काज में जोतने रहै छलिऐ आब ओ अपन आठ घंटा ड्यूटी बजा लै अछि—साँझ क सिनेमा देखै अछि, कोट-पेन्ट लगोने पार्क क हवा खाइ अछि।

कल-कारखाना अएला सँ पुरनका समाज ढहि क खसि पड़ल। मिल क साड़ी-साया, काँटा-क्लीप, तेल-फुलेल, फाउन्टेन-पेन घड़ी, ब्लाउज, अलता, पाउडर, भेसलिन और चट्टी आदि जाहि सरकी तर में हवो कएँ जाएब कठिन तहू ठाम ओकर राज कायम भ गेलैक। लोक हाँ-हाँ करितैं रहल की रोहिणी बौआसिन चट्टी पहिरने माँसु लाड़ि देलैन्ह। बाबू अंगरखा खोलिकए खाइ छथि प्रभा दाई साड़ी तर क साया थारी परसै काल में झुलै छैन्ह। बाबू एखनहुँ पुराण बँचै छथि जे प्याजु केवल चाएडाले खाए फणो दाई कएँ बिन प्याजे माछ नीके ने लगै छैन्ह। काका पहिने होटल में खाएब हराम बुझैत रहथि मुदा जखनि रैयति पर मुकदमा क पैरवी लए दिन-राति कचहरीए में रह पड़ैन्ह त आब बिन आमलेटे रसे ने अबै छैन्ह। मझिली बौआसिन द्विरागमन में कनात लगा क आएल रहथि और तेहने घोघ-मढ़ौल काढ़ने रहथि जे बुझि पड़ए जे नाचघरक पुतरी छिकी मुदा भइबट क बेरि में खेत क आड़ि पर जा भैंसुर सँ लड़ि अयलीह।

सुन्दरबाबा अपन सब भातिज कें बेटे समान मानैत रहथि मुदा बैतरणीए काल में हुनकर सुपुत्र गौंड़ो बाबू संदुक क कुंजी ओरियाक किन्तु नुका क आँगन में राखि अयलाह। फुचाइबाबा जकाँ जे वैद्यनाथजी सात सात टा विआह करितथि से खाइले की दीतथिन्ह बगौर। छोटका बाभन सब त बेटी कएँ खर्चा दइत दइत आब अपनहिं फुरसति भ गेल। घकजरी-पिंडारूछ बरद मानुषेक खुर-पुजाइ में छुट्टी भ गेल। पूब भरक बाभन सब जेना गाए लए साढ़ तकैए तहिना धारे झा कए तकै लए जुआएल बेटी क अंगैठी देखैत रहए मगर धारे झा क खोज नहि छोड़ए। आब अपनहिं एक पति पत्नी विआह चल लागल। आचार-विचार बदलि गेल। "जमाना उनटि गेलै अछि, घोर कलियुग आबि गेल" ई ख्याल छैन्ह योग-शोति बाबू क।

व्यवहारिक विज्ञानक जमाना आबि गेलै। अज्ञान क नाश होम लगलै। आब लोक बुझ लगलै जे वर्षा कोना होइछै, पानि कोना बनै छै, दिन-राति किए होइछै, दुख-रोग किये होइछै और कोना छूटत, आगि की छिऐ आदि तैं आब इन्द्र, वरुण, अग्नि, भूत-प्रेत, कबूला-पातिअ आदि दिन-दिन खतम भ रहलै अछि। महादेव क पूजा करै वाला पर लोक हँस लगलै कारण लिंग-पूजा तखन लोक अज्ञान सँ करै छलै जखन लिंगक्रिया सँ बच्चा क जन्म पर आश्चर्यित भ जाइछल। मुदा पूंजीवादियो समाज में 'एक भगवान', 'अन्तर्यामी शक्ति', 'अपरिवर्तनशील' आदि कोने ने कोनो रूप में जीवैत रहलाह।

पूंजीवादी समाज में स्त्रीगण मजुरीन भऽ क कमाए लागल त फेरि ओ पहिने जकाँ स्वतन्त्र होम लागल। कल-कारखाना, स्कूल-कालेज आदि सब ठाम स्त्रीगण आबए-जाए लागल। सिर्फ ओहने स्त्रीगण जे इनार महक बेंग अछि पुरान-समाज सँ चिपकल अछि और अज्ञानवश मरल गाए क स्तन दाँत धऽ धऽ घीचै अछि मुदा दुध नहिं भेटै छै। पुरान-समाज आब मरल गाए छी ओ ककरो दुध नहिं द सकै अछि। किछु स्त्रीगण अधकचरा भ गेल छथि। हिनका लोकनिक नवीनता स्नो-पाउडर, लिपस्टिक, आगू कोचा तै पर सँ रूमाल खोसल चट्टी, घड़ी और चश्मे तक सीमित छैन्ह। हिनका "अपनो चालि" बिसरि गेलि छैन्ह। ई लोकनि नाच मँहक विपटा भ गेल छथि—पढ़ब-लिखब, बात-विचार में पुरान और फैशन-फाशन में नव।

पूंजीवादो समाज में राज चलेवाक नव ढंग भेलैक। जगह-जगह रेल-तार, थाना-पुलिस, नियम-कानून, अखबार, सभा, वोट, असेम्बली आदि क प्रथा चललै। पुरनका समाज में ई सब नहिं रहै। एखनहुँ तक नेपाल में नहिं छै। नव समाज क शासन-व्यवस्था कएँ "लोक-राज" कहै छै।

पूंजीवादियो समाज में हम देखै छिऐ जे जीवन क साधन (चर्खा, हर-फार सँ कल-कारखाना और ट्रैक्टर आदि) जैहने बदलि गेलै की सम्पूर्ण समाज क बाहरी स्वरूप समयानुकूल एकदम बदलि गेलैक। एक टा नव समाज क जन्म भेलैक जकर नव शासन-व्यवस्था, धर्म, रहन-सहन, पहिरब-ओढ़ब, आचार-विचार, मान-प्रतिष्ठा और मानसिक-गठन आदि छैक

(५)

गिरिडीह
१८-६-४८

नेपाल राजक शासन व्यवस्था और अपना लोकनिक
शासन व्यवस्थामें जे फर्क अहाँ देखै छिऐ सैह फर्क करीब २
सामन्तवाद क "रामराज्य" और पूंजीवाद क "लोक-राज्य"
में छै। पूंजीवाद क जमाना में खास प्रधानता रहैछ उद्योग-
धन्धा और व्यापारक। व्यापारक लेल जरूरी छै जे काँच
माल (तूर, पाट, लोहा, अबरख आदि) अनेक और तैयार
वस्तु (कपड़ा, बोरा, कुड़हड़ि-कोदारि) पहुँचेवाक साधन हो।
तैं अंग्रेज व्यापारी देशक कोन-कोन में रेल-लाइन घुसौलक।
व्यापारक सामान लएवा-जएवा में कतहु लूटि-पाट नहिं हो
तकरा लेल जरूरी छलै जे सब गाँव में ओकर आदमी रहै तैं
कोतवाल, थाना-पुलिस, कचहरी आदि सब जरूरी भ गेलैक।
कानून बनाएब सेहो बड़ जरूरी भ गेलैक। बिना ओकरे
लूटनिहार कएँ सजाए, कारखाना में काज करै लए मजदूर
(यदि कानून में सबकएँ बराबरि नहिं बना दिवै त लोक अपन
अपन बहिया कएँ जबरदस्ती अपने काज में रखिवै) हैवे
नहिं करिवै। जमीन व्यवस्था क लेल कानून, उत्तराधिकारक
कानून, रजिष्ट्री, कारखानाक कानून ई सब स्वतन्त्र शोषण क

लेल परम जरूरी रहै। बिना कानून क भूत बनौने शोषण नहि
केल जा सकै छै। छोटानागपुरक आदिवासी कएँ जे
स्वभावत: नियमकानून क विषय में एकदम अनभिज्ञ छल
मारि मारि कऽ कानून क आतंक बुझाओल गेल छैक जाहि सँ
लोक में ई धारणा भ जाइ जे ओकर दयनीय हालत रहब
स्वाभाविक छिऐ कारण कानूने सेह छै। एहनसन कम जेना
कानून कोनो अलौकिक शक्ति बनवइत हो।

व्यापारक लेल समयक बड़ कीमत होइ छै। एके घंटा में
चीजक दाम घटि बढ़ि गेला सँ करोड़ो टका क नोकशान भ
सकै छै ओकरा लेल तार, टेलीफोन, रेडियो आदि सब किछु
परम आवश्यक छै। फेरि एहि सब विषय कें चलबै लै पढ़ल-
लिखल लोक (किरानी) क जरूरी तैं हेतु स्कूल कौलेज क
स्थापना कएलक। यद्यपि पूंजीवाद ई सब काज अपना फायदा
लेल केलक मुदा एहि सब सँ लोकक सेहो उपकार भेलैक जेना
बाट कातक घरवाला जौं अपना दालान पर लालटेन बारत
त बाट पर गेनहार कें सेहो उपकार हएतैक और इजोत में
चलनहार सँ दु पाई टैक्स सेहो घरवाला कए भेटि जएतैक।
चूंकि पूंजीवाद सँ लोकक उपकार भ सकै छलै तएँ पूंजीवादक
आंदोलन कएँ लोकक मदति भेटलैक। निरंकुश राजाक,
खिलाफ जनिकर मुँहे कानून रहैन्ह पूंजोवाद आवाज उठौलक
और लोकक मदति सँ ओहि निरंकुश सत्ता कें या त नाश क
देलकैन्ह या चुप। लोक आन्दोलन सँ पूँजीवादी क राज्य
कायम भेल। लोक सभा (असेम्बली) बनल जाहि में लोक

अपन अपन आदमी कें वोट सँ चुनि क पठाबए और ओ लोकनि ओत कानून बनाबथि। राज्यसत्ता एहि लोक-सभाक हाथ में चल अएलैक।

ई सब त भेल ऊपरी व्यवस्था मुदा पूंजीवाद कएँ एकटा भारी घूनक कीड़ा लागल छै। ओ कीड़ा थीक नफा कमएवाक अनिवार्य प्रवृत्ति। बिन नफे पूंजीवाद जीवित ने सकै अछि और सब दिन नफा हैब ओहि व्यवस्था में असंभव छै। कहब से कोना? देखू, पूंजीपति की करै अछि? मानिलिअ भरि दिन ओकरा कारखाना में केओ मजदूर काज करै छै और एक दिन में चारि टा कोदारि बना देलकै। पूंजीपति ओकरा एक दिनक दु टका मजदूरी देलकै और मानिलिअ जे दु रुपैया कच्चा लोहाक दाम, मशीनक घिसाई नौकर चाकरक दरमाहा आदि सब में लगलै। त ओहि चारि कोदारिक दाम हेवाक चाही ४) रु० याने एक रुपये कोदारि। मुदा पूंजीपति वेचत दु रुपैये याने ८) रु० में। त ई फाजिल ४) रु० कत सँ औतै और के देतै। ई फाजिल ४) रु० लोक कएँ देब पड़तै। चूंकि कोदारि खरीदब बड़ जरूरी छै तएँ लोक कपड़ा लत्ता नहिं खरीदि कए, धिया-पुता कएँ गाँव में हाँकि कए या दुखितक उचित दबाई-बीरो नहिं करा क कोदारि खरीद लेत। मुदा एना कतेक दिन लोक खरीद सकत जखन पूंजीपति देतै लोक कें चारि रूपैया और लोक सँ चूसि लेतैक आठ रूपैया एना चुसैत-चुसैत एक दिन औतैक जहिया लोकक पास कोनो चीज खरीदवा लै पैसा नहिं रहतैक दोसर दिश पूंजीपतिक कारखाना नित

दिन लाख-लाख चीज उगिलैत रहै छै। लोक भूखे मरैत रहत और बाजार में ढेर सामान पड़ल रहतै मुदा लोक कें पाइए नहि रहतैक जे कोनो चीज खरीदत। जखन चीज नहि विकैतेक तखन पूंजीपति कें अपन कारखाना बन्द कर पड़ै छै कारण ओकर गोदाम में माल टाल लागल रहै छै। एहना हालत में लाख-लाख मजदूर बेकार भ जाइ अछि, भूखे मर लगै अछि। रेल-तार-टेलीफोन सबहक कम जरूरति भ जाइ छै और हर विभाग सँ नौकरीपेशा लोक कें जबाब भेट लगै छै। पढ़लो-लिखल लोक नौकरी बिना मारल फिरै अछि। एकरे कहै छै पूंजीवादक आर्थिक संकट। इएह छिकै पूंजीवादक अन्तरविरोध जकरा पूंजीवाद कोनो हालत में रोकि नहिं सकै अछि। १९२९ ई० में एहने संकट आएल जाहि में एकटा अमेरीका में करोड़ो मन गहुँम जरा देल गेलै, इंगलैण्ड में लाखक लाख संतोला समुद्र में भसा देलकै। कहब जे एहि लोक कें किए ने द देलकै जे दुरि क देलकै। यदि ओ पूंजीपति लोक कें ओ समान दऽ दितैक तखन तऽ लोकक जरूरति पूर्ति भ जएतैक और फेरि जे सामान कारखाना में बनतैत से केओ नहि खरीदितैक। एहन समय में बड़ बड़ कंपनी, बैंक, ट्रस्ट सब फेल क जाइ छै और छोटका त एकदम मारल जाइछै। आई फेरि दुनिया में एहने संकट आबि गेल छैक। अमेरिका क कारखाना में ततेक बनल चीज तैयार छै जतेक दुनियाँ छ वर्ष में खर्च करत। तैं अमेरीका भूखल डाइन जकाँ बौआ रहल अछि ट्रूमैन योजना

मार्शल योजना, नेहरू योजना आदि क भेष में ओ कोनो पर्दे आन देश में आ अपन सौदा बेचि सकए।

अहाँ देखबिऐ जे जे पूंजीवाद एक दिन कल-कारखाना खोलै छल रेल-तार लगबै छल, स्कूल-कौलेज खोलने छल, आदमियो कें पढ़बै लिखबै छलै और ओकरा कल कारखाना में काज दै छलै सैह पूंजीवाद कें अपन आन्तरिक संकट क चलते जे ओकरा में अवश्यम्भावी छै, सब किछु बन्द कर पड़ै छै। आदमि क कौन कथा पुरूषो कें नौकरी नहि भेटै छै, पढ़ब-लिखब बन्द कर पड़ै छै। एतबे नहि, यदि कोनो नव पैदावार क तरीका जाहि सँ पैदावार बहुत बढ़ि सकै छै, अनुसंधान होइ छै त पूंजीपति ओकरा दबा रखै अछि कारण ओकरा निकलला सँ ओकरा अपन मशीन बदल पड़तैक, बीजक पैदावार एतेक बढ़ि जएतैक जे पूंजीवाद क संकट जल्दी आ औतैक। यदि एखन एटम शक्ति क रहस्य अमरीका खोलि दिअ त एक हिसाबे ओ पूंजीवाद मृत्यु दिन निश्चित कय देत। एहन हजारो दबाइ छै जाहि सँ मानव-समाज क बहुत फायदा हएतैक किन्तु पूंजीपति ओहि वैज्ञानिक सँ ओकरा खरीद कए चुप राखि लेने अछि जे ओकर बदला में ओ दवाई ओइ सँ बहुत निकम्मा छै ओही पूंजीपति कए ओ बिकाइत रहो। वर्त्तमान युग में पूंजीवाद दुनिया कें पाछू दिश घोंचै वाला शक्ति भ गेल अछि। ओहि सँ आब मानव-समाज असंख्य नोकसान उठा रहल अछि। ओकर सर्वनाश करब जरूरी ता नहिं छै ओ बिना कएने मनुष्य समाज स्वयं खतम भ जाएत।

सवाल उठै अछि पूंजीवाद एहि संकट कें कोना सम्हारबै अछि और लोक ओकर सर्वनाश कोना करए और आगू की करए?

पूंजीवाद क जीवन में ई अति उत्पादन संकट के घेरि अएलै अछि। प्रारम्भ में इंगलैण्ड कें जखन अपना देश क सौदा अपना देश में नहिं बिका सकलै तखन ओ आन सौदा हिन्दुस्तान, अमरीका, चीन, आस्ट्रेलिया, अरब देश, सुदूर पूर्व आदि देश में बेचि कए व्यापार कएलक। मुदा थोड़बे दिनक बाद अहू सब देश कएँ चूसि कए सिट्ठी बना देलकैन्ह। ओही समय फ्रांस, इटली और जर्मनी क पूंजीवाद से हो बहुत उन्नति क गेल। खास क जर्मनी कें बहुत जरूरी भेलक जे अपन चीज बेचै ओकरो हिन्दुस्तान सन बाजार भेटै। मुदा समूचा दुनिया कें त इंगलैण्ड पहिनहि हड़पने रहए तएँ इंगलैण्ड और जर्मनी में १९१४ ई० में लड़ाई भेलै। जर्मनी चाहलक जे इंगलैण्ड सँ अपना लए बाजार छीन ला।

जर्मनी हारि गेल। थोड़े दिन क लेल पूंजीवाद क संकट हल भ गेल। मुदा लड़ाई क कारण नहिं खतम भेल छल। जावत तक पूंजीवाद रहत लड़ाई हएबे करत। थोड़बे दिनक बाद जर्मनी फेरि पनकि उठल। एहि बेरि ओकरा संग जापानो उठल। मुदा एहि बेरि जर्मनीक जनता क आँखि पहिलुका अपेक्षा बहुत किछु खुजि गेल छलैक। एहि बेरि जखन जर्मनी में संकट अएलहि त लोक चाहलक जे राज्य पर कब्जा क ली। पूंजीवादी व्यवस्था कें खतम कए समाजवाद क

स्थापना करो। जर्मनी क पूंजीपति वर्ग सचेत भ गेल। ओ अपन दलाल हिटलर कें चोरा बोबाजी कए जेना गेडुआ रंग ओढ़नी लहिना "राष्ट्रीय सोशलिस्ट" क खाल ओढ़ा क ठाढ़ कएलक। तमाम बड़का बड़का पूंजीपति हिटलर कें धन-न-मन तीनू सँ मदति देलकै। चुनाव में सोशलिस्ट पार्टी (सोशलिस्ट डेमोक्रेटिक पार्टी) हिटलर कए मदति द देलकै जाहि सँ कम्युनिस्ट पार्टी बहुत मजबूत पार्टी होइतहुँ हारि गेल। हिटलर क हाथ में राज सत्ता अबितहि ओ मजदूर आन्दोलन कें गोलीक बल सँ खून नदी में डुबा देलक। मजदूर आन्दोलन क सब सँ अगुआ नेता हजार-हजार कम्युनिस्ट कें गोली सँ उड़ा देलक। पूंजीवाद क ढकोसला लोक सभा, वोट आदि सब कएँ हिटलर कए खाक क देलक। अपन नादिरशाही कायम क देलक। एक बेरि जखन जनता क सब सँ अगुआ हिरावल कम्युनिस्ट पार्टी कए खतम क देल गेल तखन जे केओ जे किछु बाजल तनिका लए गोली मुँह बौने रहै छलैन्ह।

हिटलर बेकारी क समस्या हल करै लए युद्ध क तैयारी करै लागल। बेकार लोग कें फौज तथा फौजी कारखाना में काज द देल कै। अति पैदावार संकट से हो सम्पूर्ण उद्योग कएँ युद्धरत कएला सं सुलझा गेलैक। लोक क भूख कए शान्त करवा लए हिटलर लोक कें कहए लगलै जे "देश जीत कए अनै छी त तोरा सब सुखित भ जएबह।" एहि भूल-भुलैया में सम्पूर्ण राष्ट्र कें ५.६ँ क युद्ध क हथियार बना

देलकै। सुव्यवस्थित कम्युनिस्ट पार्टी क अभाव में ओकर जवाब केओ नहि द सकलै। सोशलिस्ट पार्टी क तऽ ई विश्व-व्यापी परंपरा छै जे चिचयाएत "समाजवाद, समाजवाद" मुदा आइ तक दुनिया क एको देश में समाजवाद कायम नहि कएलक अछि। असल में त ई पार्टी समाजवाद जाहि सँ कायम नहि हो तकरा लेल समाजवाद क नाम पर कोनो टा कुकर्म उठा नहि रखलक अछि। जर्मनियों में अपने परम्परा कें निवाहलक। हिटलर सम्पूर्ण स्त्री जाति कए फेरि चुल्हा फुकै में लगौलक। ओकर सिद्धान्त रहै जे स्त्री चुल्हा पजार-बाक और बच्चा जन्मेबाक यन्त्र थीकि। हिटलर जाहि तरह क राज व्यवस्था कायम कएलक ओकरा गुंडाराज या "फासिज्म" कहल जाइ छै। मुदा फासिज्मो में पूंजीवाद क अन्तरविरोध क नाश नहि होइ छै वल्कि और तेज भ जाइ छै। हिटलर कें तुरन्त लड़ाई करय पड़लै और ओहि लड़ाई में ओकर सर्वनाश भऽ गेलैक। पूंजीवाद कें अपने उत्पन्न कैल आर्थिक संकट सँ बचवाक दुइए टा रास्ता छैक गुंडाराज या लड़ाई। असल में गुंडोराज लड़ाईए लए कायम होइ छै, लड़ाइए ओकर अर्थ नीति रहै छै।

आब सवाल उठै अछि एहना संकट काल में लोक-सभा (असेम्बली) की करै अछि?

हम अहाँ कें सभ पहिने कहलहुँ अछि पूंजीवादी क जमाना में एहन लोक सभा या सरकार बनाएब पूंजीवाद क लेल जरूरी रह छै तैं एहन सरकार ओ बनबै अछि। ओहि

सरकार सँ ओ जे जे चाहै अछि करबै अछि। लोक कएँ देखै में अबै छै जे सरकार निष्पक्ष होइ अछि और कचहरी में फैसला जज से हो निष्पक्ष होइ अछि मुदा ई बात एकदम भ्रम थीक। जतेक अफसरान चाहे ओ पुलिस विभाग क हो अथवा न्याय विभाग क सब कोनो ने कोने जमींदार-पूंजीपति क बेटा-भातिज रहै छै। चाचा चार भतीजा काजी जिनका सँ जे न्याय में शक करए से पाजी! चुनाव जे होइ छै ताहि में पूंजीपति कए पास रुपया रहै छै गलत-सलत प्रचार करै अछि। लोक आदमी क वेष में (खादी-टोपी) अपन दलाल कएँ जीतवा लै अछि और एहि तरहें लोक-सभा पर कब्जा कएने रहै अछि। वोट में तऽ रुपैया और तिकड़म जकरा पास हेतै सैह जीतत। महाराज साहेबक खिलाफ ठोठरा मुसहर कोना जीतत? यदि महाराज बड़ बदनाम रहताह त लाख दु लाख में कोनो लोक नेता कें फँसा लेताह और ठोठरा कए हरा देथीन्ह। तहू सँ जौं नहि हेतैन्ह त जौं ठोठरा दल क लोक-सभा पर कब्जा भ जएतैक तऽ तमाम अफसरान फौजी, अदालती, पुलिस सबहक बल सँ गुंडाराज कायम कए लेताह जेना स्पेन में। निष्कर्ष ई भेल जे जकरा हाथ में जीवन निर्वाह क साधन रहै छै सरकार या लोक-सभा ओकरे रहै छै। जावत तक जमीन पर कल-कारखाना पर जमींदार-पूंजीपति वर्ग क अधिकार छै तावत तक चाहे नेहरू क सरकार होइन्ह अथवा एटली कएँ सरकार पर अधिकार जमींदारे-पूंजीपति कए मूलत: रहतैक। तैं एहना संकट काल में लोक-सभा से हो

जे जे पूंजीपति वर्ग कहै छै ताहि पर मोहर लगबैत रहै अछि।

तखन पूंजीवादी संकट सँ उबरबाक कोन उपाय? उपाय इएह जे जखन बाजार में दिश कल-कारखाना बन्द होइत रहै छै, लाखों आदमी बेकार मारल फिरै अछि, स्कूल-कालिज बन्द होमै पर रहै छै, मिल मालिक क गोदाम में एक लाख-लाख गाँठ कपड़ा पड़ल रहै छै, हजारों मन गहूँम, फल, माँस खएबाक जानवर या अन्य तरहक लोक क जरूरत क सामान बरबाद कएल जाइ छै और दोसर दिश अन्न बिना भूखमरी होइछै, बेकार लोक भिखमंगा भ जाइ अछि, लोक क माए-बहीन नाङ्गट रहै छै तखन मजदूर-किसान राज पर कब्जा कए लै अछि। एकरे कहै छै इनकलाब। पुलिस-फौज पुरनका शासक क अव्यवस्था स एतेक तंग भ गेल रहै अछि जे राजसत्ता पर कब्जा कैएन हार क दिश मिलि जाइ छै। तखनि लोक जमींदार सँ जमीन छीनि गरीब किसान, खेतिहर-मजदूर में बाँटि दै छै। कल-कारखाना पर मजदूर कब्जा कय लै अछि। अपन पुलिस-फौज, कोर्ट-कानून, बनबै अछि। धनीक क धन गरीब में बाँटि देल जाइ छै। फेरि सामूहिक उत्पादन क तरीका सँ देश क उत्पादन कए उन्नति क शिखर पर पहुँचा देल जाइ छै। लोक कें पैसा भ जाइ छै। किसान अन्न उपजाबए लगै अछि, मजदूर कपड़ा, तेल, नोन, एशोआराम क चीज, औजार आदि। सब कएँ काज भेटि जाइ छै आनन्द सँ जीवन बीतबए लगै अछि। आब यदि ओ एक दिन में चारि टा कोदारि बनौने रहत त ओकरा चारू कोदारिक दाम आठ टाका भेटि जएतैक।

केओ नफा कमेनहार नहिं रहतैक। रूस देश में एहने किसान-मजदूर क राज कम्युनिस्ट पार्टी वाला १९१७ में इनकलाब कए कायम कएलैन्ह। बिना इनकलाब कएने एहन राज कहियो नहिं कायम भ सकैत अछि तकर साक्षी आइ तक क दुनिया क इतिहास अछि। आइ रूस में हजार में ९९५ पढ़ल-लिखल लोक छै। केओ स्त्री पुरुष बेकार नहि अछि। माउगि-पुरुष दुनू क हक बराबरि छै दुनू पढ़ल-लिखल होशियार! रूस क माउगि हवाई जहाज, टैंक, ट्रैक्टर हँकै अछि। दुनिया में सबसँ तेज हवाई हँकै में फस्ट केनिहार एक माउगि थीक। रूस क लोगया अहाँ सबहक जकाँ नाना तरहक लोक बीमारी सँ ग्रसित नहिं रहै अछि। पुरुष-माउगि दुनू कसरत करै अछि। खूब हृष्ट-पुष्ट रहै अछि। रूस में रंडी क नाम नहिं छै। केओ पुरुष वा माउगि एक टा सँ बेसी स्त्री या पुरुष क संग नहिं रहि सकै अछि। तलाक करीब करीब एकदम नहिं होइ छै। सब पढ़ल-लिखल होशियार तन्दुरुस्त रहै छै तएँ अनाचार क नाम नहिं छै। केओ युवक कोनो युवती सँ ओकर सम्मान हानि क कोनो बात कहथीन्ह त ओहो हुनका सँ कमजोर नहिं रहै अछि ऊपर सँ दु थप्पड़ ध देतैन्ह। असल में एक नव, आदर्श आचार-विचारक सृष्टि होइ छै जे प्राप्त करै लए मनुष्य जाति कहिया सँ स्वप्न देखै छल। ने ओतए घोघ छै ने घोघ तरसँ साँप मारल जाइ छै। स्त्री पुरुष दुनू कमेनिहार (सिर्फ ६ घंटा काज और २५०) रु० (पहिलुका) सँ कम ककरो दरमाहा नहिं। राज क दिस सँ सबकएँ मुफ्त शिक्षा देल जाइ छै। रूस क कोनो गाम

मे ढिबिया लालटेन नहि जरै छ घर-घर बिजली लागल छै। घर घर में रेडियो छै। सब गाम क क्लब, नाच-घर, स्कूल, पार्क, सिनेमा-घर आदि छै सिनेमा ओतए शिक्षक क काज करै छै। एक टा नव संस्कृतिक घर ठाढ़ भेल छै जकरा लए मनुष्य जाति ललाइत छल। बीमार बहुत कम होइछै। ओतए केवल सरकारी डाक्टर छै। फीस लेबा लए बीमारी बढ़ाएल नहि जाइ छै। डाक्टर क असल ध्येय ई रहै छै जे समाज में बीमारी होमए नहिं दी ई नहिं जे हैजा हएतैक त हमर खूब चलत।

आइ रूसे में नहिं, रूस सँ सटल पश्चिम पोलैंड, रूम, बलगेरिया, हंगरी, अलबानिया, चेकोस्लावाकिया और युगोस्लोविया सब में एहने शासन-व्यवस्था कायम भ गेलैक अछि। एक तिहाई चीन में सेहो कम्युनिस्ट पार्टी एहने राज व्यवस्था कायम केलकै अछि। आब सम्पूर्ण संसार में हएबाक बारी छै। जहिना पूंजीवाद कएँ सम्पूर्ण संसार मे पसर सँ केओ नहिं रोकि सकलै तहिना कम्युनिज्म कएँ (जाहि तरहक राज रूस में छ) केओ नहिं रोकि सकै छै। ई मानव जाति क विकास क आगू सीढ़ी थिकैक। जौं मनुष्य जाति कएँ आगू बढ़बाक छैक त ई सीढ़ी पर पैर देबैक टा पड़तन्हि एकरा केओ रोकि नहि सकै छै।

जे पूंजीवाद क संकट क विषय में ऊपर हम कहलहुँ अछि से संकट सँ आगुक पूंजीवाद भसित अछि। एहि बेर क संकट और भयंकर छैक कारण औद्योगिक संकट क संग संग कृषी संकटो गांथल छैक। दुनिया दुनिया में पूंजीवाद क बाजार

पहिलुका अपेक्षा बहुत कमि गेलैक अछि जे बाँचलो छै सेहो डंवाडोल छै (कम्युनिस्ट आन्दोलन सँ)। असगरे अमरीका क गोदाम में ततबा क माल जमा छै जतबा सम्पूर्ण दुनियाँ छ वर्ष में खपाएत। जहिना विज्ञानक नव-नव अनुसंधानक लेल लेबो- रेटरीज छैक तहिना मानव जातिक एहि सामाजिक राजनैतिक स्तर पर पहुँचै लेल कम्युनिस्ट पार्टी क जरूरी छै। कम्युनिस्ट पार्टी एक लेबोरेटरी मात्र छी जतए सँ वैज्ञानिक लोकनि अपन अनुसंधान करै छथि। जेना दुनिया क कोनो कोन में वैसल एक वैज्ञानिक व्यवहार परिक्षा सँ एके फल पर पहुँचै अछि तहिना कोनो देश क कम्युनिस्ट। एहि विचार एकता में कोनो आश्चर्य नहि छै।

ई सब करै में रूसवाला किएक समर्थ भेल? कारण ओतए असल सत्ता जनता क हाथ में छैक। कहै लए तऽ हिन्दुस्तानो में सत्ता जनतेक हाथ में छैक मुदा ई केहन धोखा छिऐ से हम अहाँ सबकोओ जनै छी। जखन कल-कारखाना क मालिक टाटा-बिड़ला अछि जखन जमीन क मालिक जमीं- न्दारसभ अछि तखन भला सत्ता क मालिक जनता कोना भेल। उत्पादन क साधन के मालिक जे अछि सैएह सत्ता या सरकार क मालिक होइ छै। चाहे कतबहु ने जोर जोर सँ जमाहिर लाल चिचियाथु जे ई जनता क राज थीक मुदा सब व्यर्थ। जनता क राज भेला सँ ई जनता क हाथ में रहतैक जे कतेक एस॰ डी॰ ओ॰ ओ ककरा बहाल करै अछि। उदाहरणतः एहि मिल क मनेजर के हुए या एहि मनेजर के निकालि देल

जाए एकर निश्चय ओहि मिल क मजदूर करत ने कि हजार कोश दूर दिल्ली में बैसल अफसर क इच्छे टा। फेरि चुनल एम॰ एल॰ ए॰ के जखन जनता चाहे अविश्वास कय हटा सकै अ। पूँजीवादी जनता राज जेहन हिन्दुस्तान में अछि और कम्युनिस्ट जनता राज जेहन रूस में छैक इएह मूल फर्क छैक और अहि फर्क कारण जतए रूस में सब सुखीसम्पन्न रहै अछि अपना देश में सब साल हजारो हजार भूखे अकाल और महामारी में मरै अछि। कम्युनिस्ट प्रजातन्त्र असल सत्ता सब सम्पति या उत्पादन क साधन क मालिक रहै अछि।

